छुटकारे का इतिहास–भाग 4

अध्याय 31: पुराने नियम में नई वाचा

डॉ. डेविड प्लॉट

यदि आपके पास पवित्र शास्त्र है, और आशा है कि आपके पास वह है, मैं चाहूंगा कि आप यिर्मयाह अध्याय 31 को खोले। यिर्मयाह अध्याय 31 कभी कभी यह पुस्तक अत्यंत निराशाजनक लगता है, है ना? जैसे कि हम यिर्मयाह की पुस्तक से पढ़ते हैं तब हम जान जाते है कि यह भविष्यद्वक्ता विलाप करने वाला भविष्यद्वक्ता के रुप में क्यों जाना जाता है। उस पर विरोध करने वाले, बलवा करने वाले लोगों को यह बताने की जिम्मेदारी थी कि उन्हें उनके शत्रु बाबेलोन के आधीन होना पड़ेगा– क्योंकि बाबीलोन उनका सर्वनाश करने वाला था– यरुशलेम का विनाश करने वाला था– ओर यह परमेश्वर की इच्छा थी। और बिलकुल यही हुआ : ई. पू. 586 में यरुशलेम का नाश हुआ। परमेश्वर के लोग बंधुआई में ले जाने के लिए घसीटे गए। यिर्मयाह भी मिस्र में बधुआई में चला गया, जी हां, उसके अपने लोगों के कारण।

यह सब कुछ साधारण रुप से पढ़ने की बात नहीं है। और फिर भी इस बहुत लंबी पुस्तक के बीचोबीच हम चार अध्याय देखते हैं।– अध्याय 31–30, 32 और 33 में हमें आशा और आराम और भविष्य की वाचा का चित्र मिलता है। यह चित्र यिर्मयाह 31:31–34 के चारो ओर नयी वाचा की चारो ओर घुमता हैं। आप शायद यह सोच रहे होंगे कि ''इस उपदेश का शिर्षक'' ''पुराने नियम में नई वाचा'' है, और उसका मेरे जीवन में क्या संबंध हो सकता है।'' और मैं चाहता हूं कि आप यह जान लें कि हम और आप उस लोगों के पीछे लंबी कतार में खड़े है जो हमसे पहले जा चुके है और जिनके साथ परमेश्वर का संबंध रहा है।

हम आज ही के दिन तस्वीर में आकर यह नहीं कहते, ''ठीक है, हम परमेश्वर के साथ किस प्रकार संबंधित हो सकते हैं?'' वास्तविकता यह है– और यह बात आप भलीभांति जान लें : अब्राहम, इसहाक, याकूब और मूसा और दाऊद और यिर्मयाह का परमेश्वर आपका परमेश्वर है। और जिस परमेश्वर ने इन लोगों के साथ 2,600, 2700 वर्ष पहले बात की थी वो ही परमेश्वर आज हमसे अपने लोग जानकर बात करता है। और मैं चाहता हूं कि आप यह जान लें हमें इस लंबी कतार, पीढ़ी दर पीढी एक बात संबंधित रखती है वह है परमेश्वर की वाचा के चारो ओर बने रहना। ओर मैं चाहता हूं कि इस वाचा के मध्य स्थान में – अब्राहम, मूसा, दाऊद और परमेश्वर की वाचा के मध्य और परमेश्वर के हमारे साथ संबंध के मध्य – इन सब पीढ़ियों के मध्य स्थान में – अनेक वर्षों से चलें आ रहे परमेश्वर के लोगों के मध्य स्थान में इन सब कुछ के मध्य स्थान में मसीह है। और वह परमेश्वर के प्रेम, दया और हम सबके

लिए उद्धार का अत्यंत महान चित्र है। और मसीह की मेज में शामिल होने के साथ मैं मसीह को संपूर्ण महिमा देना चाहता हूं जिसका वह हकदार है। और हम उसी ओर जा रहें हैं।

अब, इस बात को समझने के लिए, हमें पुरानी वाचा को समझना आवश्यक है और पवित्र शास्त्र के नियमबद्ध वचन के द्वारा हमें इसे अब तक देखते आए हैं। हम ने देखा है कि परमेश्वर ने अनुग्रह की वाचा के द्वारा अपने लोगों से संबंध स्थापित किया। हमने देखा– और यहां हम उसे केवल दोहरा रहें है– आदम के साथ परमेश्वर की वाचा आदम और हव्वा के साथ सृष्टि की निर्मिती की वाचा जो उसने अपने अभिवचन अर्थात् उनसे शब्द रुप में बात करने के द्वारा की थी। उत्पत्ती 3 में देखते हैं कि पाप संसार में प्रवेश करता है। यहां जो वाचा टूट जाती है वह नूह के साथ वाचा की ओर ले जाती है और वह सुरक्षा की वाचा है। महा प्रलय के बाद, परमेश्वर ने अभिवचन दिया वह अपने लोगों का नाश फिर कभी इस प्रकार महाप्रलय से नहीं करेगा, और वह अपने लोगों को अंत तक सुरक्षित रखेगा जो, हमें उत्पत्ती 12,15 और 17 की ओर ले जाता है।

इस बात की सत्यता हम अब्राहाम के साथ वाचा में देखते हैं, अभिवचन की वह वाचा जब परमेश्वर ने कहा, ''मैं तुझे आशिषित करूंगा, अब्राहम, और तेरे द्वारा बड़ी जाती उत्पन्न करूंगा, तेरा वंश बढ़ाऊंगा, तुझे भूमि दूंगा और तुझपर मेरे आशीष के द्वारा मैं सब राष्ट्रों पर अपनी आशिष दिखाऊंगा।'' और यही बात वास्तविकता बनकर इस्राएल के इतिहास के रुप में जाने जाती है। जब परमेश्वर के लोग मिस्र में 400 वर्ष तक गुलाम थे तब परमेश्वर ने उन्हें मिस्र से बाहर निकाला और सिनै पर्वत तक ले आया वहां उसने मूसा के साथ एक वाचा बांधी। व्यवस्था की वाचा। और उसने अपने लोगों को व्यवस्था, अपनी आज्ञांए दी, और इस व्यवस्था के द्वारा परमेश्वर अपने लोगों के साथ संबंध बनाएं रहा।

यह 2 शमूएल अध्याय 7 में आने तक इसी प्रकार चलता रहा और फिर हम दाऊद के द्वारा परमेश्वर की अपने लोगों के साथ वाचा देखते है : स्वर्ग राज्य की वाचा, और अब यहां पर यिर्मयाह की पुस्तक के विषय में हमें और अधिक स्पष्ट बातें ज्ञानप्रद होती है, क्योंकि इस पुस्तक की रचना राज्य के गिरने के मध्य हुई है। और इसके गिरने का कारण हमें यह दर्शाता है कि पुरानी वाचा और अन्य सभी वाचा विशेष रुप से इस पुस्तक में निर्देशित वाचा में कुछ समस्या है। इन वाचाओं के साथ जो समस्या थी वह है पाप। परमेश्वर के लोग परमेश्वर के साथ अपनी वाचा को लगातार तोड़ते जा रहें थे। उसका संपूर्ण सारांश यिर्मयाह की पुस्तक में है। सबसे पहली बात परमेश्वर के लोग मूर्तीपूजक थे। बिल्कुल आरंभ ही से अध्याय 2 में, वे मूर्तियों की पूजा कर रहें थे। वे बाल तथा अन्य परदेशी मूर्तियों की ओर चले गए थे। वे मूर्तिपूजक थे और परिणामस्वरुप अनैतिक भी थे। परमेश्वर के लोग अनैतिक थे। मूर्तिपूजा हमेशा अनैतिकता की ओर ले जाती है।

इस बात की ओर ध्यान दें। अनैतिकता कभी भी रिक्तता में नहीं होती है। अनैतिकता हमेशा उस हृदय से आती है जो परमेश्वर की आराधना को टालता है। हमारे जीवन में कोई भी पाप उसकी मूलता में उस हृदय की जड़ में होता है जो परमेश्वर की आराधना को टालने या ना करने का प्रयत्न करता है। और यही हम देखते हैंः हम अनैतिकता को उसकी चरम सीमा पर देखते हैं। यिर्मयाह की पुस्तक में अध्याय 7, यिर्मयाह का मंदिर में दिया गया प्रसिद्ध उपदेश, यिर्मयाह बताता है कि परमेश्वर के लोग किस प्रकार अपने बच्चों को उन परदेशी देवताओं के सामने बली चढ़ाते थे। कोई भी व्यक्ति उस सीमा तक कैसे जा सकता है? हम अपने जीवन में पाप व अपनी संस्कृति को देखकर कहते है, ''ऐसे कैसे हो सकता है?'' वास्तविकता यह है कि यह तब होता है जब हृदय परमेश्वर से दूर जाने लगता है। अनियंत्रित अनैतिकता का मूल अनियंत्रित मूर्तिपूजा में होता है। और सबसे बड़ी समस्या यह थी कि परमेश्वर के लोग इससे कुछ अलग करने के योग्य या लायक नहीं थे।

इस पुस्तक में यिर्मयाह 100 से भी अधिक बार लोगों को पश्चात्ताप करने के लिए आव्हान देता है। बार बार और अनेक बार वह कहता है ''पश्चात्ताप करो, पश्चात्ताप करो, पश्चात्ताप करो, और वह अवज्ञा कारिता में ही चले जाते है। इससे पहले कि हम केवल उन्हीं के विषय में यह सोचें, क्या ऐसे सारे समयों में नहीं होता आया। हम कहते हैं, ''अरे! अब सुन भी लो। अपने पापों से फिर जाओ।'' परंतु वास्तविकता यह है कि परमेश्वर के लोगों का जो चित्र यहां दिया गया है वह हम सब के हृदय की स्थिति का प्रतिबिंब है। क्योंकि हम सभी मूलतः मूर्तिपूजक है अनैतिक है। और सुसमाचार हमें कहता है कि हम इससे अलग कुछ भी करने के योग्य नहीं है। और हम कहते हैं ''क्या?'' सुसमाचार–सुसमाचार का मूल संदेश? सुसमाचार का अर्थ है शुभ संदेश। इस शुभ संदेश का मूल संदेश है कि हम बुरे है और बुरे के अलावा और कुछ भी करने के योग्य नहीं है। तो फिर यह शुभ कैसे हुआ?

यह शुभ या उत्तम इसलिए है, क्योंकि हमारा परमेश्वर हम सब जो मूर्तिपूजक, अनैतिक और कुछ अच्छा न करने लायक लोगों की ओर देखता है और कहता है, ''मैं फिर भी तुम्हारे साथ विश्वासयोग्य हूं'' और यिर्मयाह 31:31 में अपने न्याय के मध्य जो वह कहना चाहता है उसका मर्म यही है। इसे मेरे साथ पढ़े ''यहोवा की यह भी वाणी है, सुन, ऐसे दिन आनेवाले है।'' यह यिर्मयाह परमेश्वर की ओर से बोल रहा है– यिर्मयाह के द्वारा परमेश्वर का वचन परमेश्वर कहता है, ''जब मैं इस्राएल और यहूदा के घरानों से नई वाचा बांधूंगा। वह उस वाचा के समान न होगी जो मैं ने उनके पुरखाओं से उस समय बांधी थी जब मैं उनका हाथ पकड़कर उन्हें मिस्र देश से निकाल लाया क्योंकि यद्यपि मैं उनका पति था, तौभी उन्होंने मेरी वह वाचा तोड़ डाली।''

पद 33 और 34 में नई वाचा का मर्म है। इन पदों को रेखांकित करें, यह संपूर्ण पुराने नियम में सबसे महत्वपूर्ण पद है, ''परंतु जो वाचा मैं उन दिनों के बाद इस्राएल के घराने से बांधूगा वह यह है`मैं अपनी व्यवस्था उनके मन में समाउंगा, और इसे उनके हृदय पर लिखूंगा और मैं उनका परमेश्वर ठहरूंगा,

और वे मेरी प्रजा ठहरेंगे, ''यहोवा की यह वाणी है, ''और तब उन्हें फिर एक दूसरे से यह न कहना पड़ेगा कि यहोवा को जानो, क्योंकि, यहोवा कि यह वाणी है कि छोटे से लेकर बड़े तक सब के सब मेरा ज्ञान रखेंगे, क्योंकि मैं उनक अधर्म क्षमा करूंगा, ओर उनका पाप फिर स्मरण न करूंगा।''

नई वाचा! वाचा– नियम अदला बदली करने योग्य शब्द। इसलिए यह नया नियम और पुराना नियम है। पुराने नियम के मध्य नया नियम यिर्मयाह जो भविष्यवाणी कर रहा है, वह नया नियम है। यीशु मसीह का आगमन और समापन या पूर्णता की वाचा। यहां पर यह शब्द प्रमुख है। ओ पायर रॉबर्टसन द्वारा लिखित एक महान पुस्तक है ''क्राइस्ट ऑफ द कवनेन्टस्'' ओर वाचा के विषय में मेरी जानकारी और ज्ञान को बढ़ाने के लिए मैं इस पुस्तक पर काफी निर्भर रहा हूं। और उस पुस्तक की कुछ भाषा का प्रभाव दिखाई देगा। विशेष रुप से यह शब्द अत्यंत महत्वपूर्ण है। समापन या पूर्णता। मैं चाहता हूं कि आप यह जाने कि इन सभी अलग–अलग वाचाओं में, जब अब्राहम की वाचा सामने आयी, या जब मूसा की वाचा सामने आयी, ऐसा नहीं था कि ''अच्छा अब हमारे पास मूसा की वाचा है, तो अब्राहम की वाचा को खिड़की से बाहर फेंक देते हैं।'' जैसे मानो अब उसका कोई महत्व नहीं है। ''चलो आगे मूसा की वाचा की ओर चलते है, उसे अब छोड़ दो।'' नहीं! यह सभी वाचा एक दूसरे के आधार पर बनी है। यहां पर एक साथ एक संबंध में आगे बढ़ना हो रहा है।

और मसीह जो नयी वाचा है उसमें हम देखते हैं कि हमने पहले जो वाचाएं देखी है उन सबका समापन है इसका अर्थ परमेश्वर के साथ मसीह के द्वारा नयी वाचा में हमारा संबंध पूर्णरुप से इन बात पर आधारित है कि परमेश्वर ने पुराने नियम के द्वारा अपने लोगों के साथ किस प्रकार संबंध रखा। और यह सभी पुरानी वाचाएं हमें नयी वाचा की अद्भुतता को समझने में सहायक होती है। और मैं चाहता हूं कि आप यह देखो कि वह समापन किसी प्रकार सात भिन्न प्रकार से आता है और यह नयी वाचा का अभिवचन है। और में चाहता हूं कि आप अपने आप को यिर्मयाह में उल्लेखित परमेश्वर के लोगों के स्थान पर अपने आप को रखें। निराशा की स्थिति में यरुशलेम का विनाश होने ही वाला था, परमेश्वर के लोगों को बंधुआई में ले जाया गया था, और यिर्मयाह यह शब्द बोलता है। इसलिए हम उसे ऐसे सुने जैसे हमारे बाप–दादाओं के शब्द है जो हमसे पहले जा चुके हैं। और इससे हमें यह समझने में सहायता होगी कि हमें नयी वाचा में कितना लाभ है।

इसलिए यिर्मयाह कहता है कि पहले हम नई वाचा को स्विकार करेंगे। नयी वाचा जो अन्य सभी पहली वाचा का समापन करती है। उसमें वो ही सब बातें होंगी– हम परमेश्वर के नियम या कानून, परमेश्वर का ज्ञान और परमेश्वर के अनुग्रह के विषय में चर्चा करेंगे। ऐसा नहीं है कि ''अच्छा तो उस वाचा में नियम था, और इस वाचा में नियम नहीं है।'' या फिर ''इस वाचा में पहले अनुग्रह था, ओर अब इस वाचा में अनुग्रह नहीं है।'' यह सभी बाते सभी वाचाओं में है। पुरानी तथा नयी वाचा दोनों में है। मैं

चाहता हूं कि हम यह देखे कि इसमें किस प्रकार बढ़ती हुई या प्रगति हुई। उदाहरण के लिए परमेश्वर के नियम के साथ परमेश्वर का नियम केंद्रस्थान में था वह आधारभूत था और ऐसा दोनो नयी तथा पुरानी वाचा में था। अंतर यहां है : पुरानी वाचा में नियम पत्थर की पटियां पर लिखा हुआ था। आपको स्मरण होगा मूसा परमेश्वर से मिलकर पर्वत पर से उतरकर आया और उसके हाथों में पत्थर की पटियां थी जिस पर परमेश्वर के नियम खोदे हुए लिखे हुए थे।

यहां यिर्मयाह की पुस्तक थी, जब यहोवा राजा था, और उसे परमेश्वर के मंदिर में परमेश्वर के लिखित निमय मिले, तब उसने कहा, ''हां, अब हमें परमेश्वर के नियमों की ओर फिर जाना चाहिए।'' तो उस समय नियम पत्थर की पटियां पर लिखा था। यह उनसे बाहर था, उनके व्यक्ति रुप से बाहर। और यिर्मयाह पद 33 में कहता है, परमेश्वर अब जो अभिवचन देता है वह मनुष्यों के हृदय पर लिखे गए नियम का है। ''मैं अपनी व्यवस्था उनके मन में समवाउंगा और उसे उनके हृदय पर लिखूंगा।'' यही हमें चाहिए है। यही परमेश्वर के लोगो को चाहिए। अनेक ऐसे संदर्भ है जिन्हें पढ़ने का समय अभी नहीं है, परंतु आप उन्हें लिख सकते हैं। उनमें से एक है यिर्मयाह 17:1, जहां यिर्मयाह कहता है, ''यहूदा का पाप... लिखा हुआ है।'' इस कल्पना की ओर ध्यान दें ''यहूदा का पाप लोहे की टांकी और हीरे की नोक से लिखा हुआ है; वह उनके हृदयरुपी पटिया पर लिखा हुआ है।'' ''पाप उनके हृदय पर लिखा हुआ है।'' और केवल उनके ही नहीं परंतु हमारे भी वास्तविकता तो यह है, यही हम सभी मानवजाती की स्थिति है। हम में से प्रत्येक के हृदय पर पाप लिखा हुआ है, वह दर्शाता है कि हम कौन है, पाप हमारे हृदय पर लिखा हुआ है।

इसीलिए यिर्मयाह 17:9 में लिखा है, ''मन तो सब वस्तुओं से अधिक धोखा देने वाला होता है।'' हृदय अत्यंत रोगी है, इसलिए हमें नए हृदय की आवश्यकता है। इन सब में हमने जो देखा है, वो यह कि यह नयी वाचा और लोगों की उसके प्रति बार बार और लगातार अवज्ञाकारिता। हम देखते हैं कि हमारा सबसे बुरा शत्रु इसे सुने। यह सब देशों में और सब राष्ट्रों में अत्यंत महत्वपूर्ण है। हमारा सबसे बड़ा शत्रु शारीरिक धार्मिकता है। हमारा सबसे बड़ा और सबसे बुरा शत्रु शारीरिक धार्मिकता है। हम यह सोचते हैं कि हम दान देने के लिए मोटी रकम अदा कर सकते हैं, चर्च की सदस्यता रख सकते है, चर्च में विवाह कर सकते है, प्रार्थना कर सकते है, चर्च जा सकते हैं यह कर सकते हैं, इस रीति से जीवन जी सकते हैं, और ऐसा करने के द्वारा परमेश्वर हमसे प्रसन्न हो जाएगा। इस संसार में सभी धर्मो का यही कहना है। और यदि यही सब नए नियम की मसीहियत है तो फिर हम कोई दूसरों से भिन्न नहीं है। हम चाहें किसी भी प्रकार का मसीही लेबल उसे लगाए, उसे मसीही प्रार्थना जोड़ने का प्रयत्न करें यह हिन्दु या मुस्लिम प्रार्थना से भिन्न नहीं है। परमेश्वर के पास जाने के शारीरिक प्रयत्न। हमारे जीवन में सबसे बुरा शत्रु हमारी यह कल्पना कि हम जो कुछ भी करते हैं, उसके द्वारा परमेश्वर के पास जा सकते हैं। शारीरिक धार्मिकता। भाईयों और बहनों हमारी सबसे बड़ी आवश्यकता आत्मिक

पुर्नजीवन है। हमें हृदय का भीतर से बदले जाने की आवश्यकता है। और नयी वाचा में यही अभिवचन है। ऐसा नहीं कि, ''नियम बाहर लिखा हुआ है, और अब इसका पालन करो।'' नहीं! नियम हमारे हृदय पर लिखा है, हमारे हृदय को भर देता है, हमारे–हृदय को भीतर से बाहर बदल देता है। हमें नए हृदय की आवश्यकता है।

अब इसका अर्थ यह नहीं कि नियम निरर्थक है। यही नयी वाचा की सुंदरता है। इस बात की ओर ध्यान दें, यहां पर नयी वाचा में प्रवेश करने के नियम का पालन करना यह शर्त नहीं है। यदि नयी वाचा में प्रवेश के लिए नियम का पालन ही केवल शर्त होती, तो हम में से कोई उसमें प्रवेश नहीं कर पाते। यही तो पूरा मुद्दा है। हम ऐसा नहीं कर सकते, परंतु इसका अर्थ यह भी नहीं कि आज्ञापालन को उठाकर खिड़की से बाहर फेंक दिया जाए। ''हां ठीक है। मैं बस प्रार्थना करूंगा और फिर जैसा चाहे वैसा रहूंगा।'' यह निश्चित रुप से नए नियम की मसिहियत नहीं है, परंतु यह नयी वाचा में प्रवेश करने की शर्त भी नहीं है। नियम का पालन करना इसे हम नयी वाचा में एक अभिवचन के रुप में अनुभव करते हैं।

परमेश्वर अपने नियम हमारे हृदय में रखकर कहता है, ''इनका पालन करने के लिए मैं तुम्हारी सहायता करूंगा।'' इसके विषय में कुछ समय बाद हम यहेजकेल के अध्ययन के दौरान देखेंगे, जहां उसका आत्मा इस रुप में दर्शाया गया है, जो हमें भीतर से होकर बाहरी बातों की आज्ञा पालन करने में सहायता करता है। जोनाथान एडवर्डस् ने जो कहा वह मुझे अच्छा लगता है। इस विषय पर उनकी व्यक्तिगत टिप्पणियां। इसे सुनें और इस पर विचार करें। जोनाथान एडवर्डस् ने कहा, ''मुझे लगता है कि इन दोनों वाचाओं में जो अंतर है वह स्पष्ट रुप से यह है कि, पुरानी वाचा में परमेश्वर ने उनसे उनका परमेश्वर बनने का वादा उनके द्वारा नियम का पालन करने की शर्त पर किया।'' आज्ञापालन को एक शर्त के रुप में रखा गया था, परंतु एक अभिवचन के रुप में नहीं। परंतु नयी वाचा में हृदय से आज्ञापालन का अभिवचन किया है। मुझे यह वाक्य अच्छा लगता है : हृदय से आज्ञापालन हृदय से आज्ञापालन! वह आज्ञापालन जो हृदय से किया जाता है।

मसीहियत ऐसी स्थिति नहीं है जहां आकर आप कहते है, ''अच्छा तो मुझे लगता है कि मुझे तुझसे अपने पापों की क्षमा मांग लेनी चाहिए ताकि में अपनी चमड़ी को अनंतकाल के विनाश से बचा सकूं। और सोचता हूं कि इस जीवन से बाहर निकलूं जो मुझे अच्छा लगता है, और उस जीवन में जाउं जो मुझे अच्छा नहीं लगता, परंतु अनंतकाल के लिए बचने के लिए यही करना आवश्यक है इसलिए मैं यह करूंगा।'' और फिर हम इस मसीही जीवन को जीने में संघर्ष करते हैं, क्योंकि हमारा मन उन बातों में लगा है जिन्हें हमने यहां छोड़ा है। नहीं! जब हम मसीह के पास आते हैं तब वह एक बिल्कुल ही नया हृदय होता है। हमारी इच्छाएं, अपेक्षाएं पूर्णरुप से भीतर से बदल चुकी होती है और हमें नयी बातों की

चाह होती है। और यही सब कुछ नहीं है, हम यह नहीं कहते, ''लगता है, मन माने या ना माने मुझे यह सब छोड़ देना होगा।'' नही! अब हमें मसीह में वह खजाना मिल गया है, जो इस संसार की उन सभी वस्तुओं से मोलवान है जिन्हें हमें छोड़ना पड़ा। और अब हमें केवल वो ही अर्थात् परमेश्वर चाहिए और हम उसी की केवल इच्छा करते हैं।

यह तो मानो ऐसा है, जैसे मैं घर लौटता हूं, और पूरे दिन के काम के बाद जब मैं घर लौटता हूं तो अपनी पत्नि को गले लगाकर प्यार करता हूं, और वह मुझसे पूछती है, ''ठीक है, पर यह सब किसलिए?'' और मैं कहता हूं, ''ऐसा तो इस पुस्तक में लिखा हे कि जब तुम काम पर से घर लौटो तो अपनी पत्नि को गले लगाकार प्यार करो।'' यह सुनकर वह क्या करेगी? वह तो उस पुस्तक को उठाकर मेरे मुंह में ठूस देगी। नहीं यह प्रेम से आज्ञापालन नहीं है। यह हृदय से किया गया आज्ञापालन नहीं है। हृदय से किया गया आज्ञापालन यह है कि ''ऐसा इसलिए क्योंकि मैं तुमसे प्रेम करता हूं और तुम्हें चाहता हूं।'' यह नए नियम की मसिहियत है। हृदय से आज्ञापालन। अभिवाचित परमेश्वर कहता है कि यह निश्चित है। जिनके पास नया हृदय है, वह आज्ञापालन करेगा। क्यों? क्योंकि नियम ने तुम्हारे हृदय को बिलकुल परिवर्तित कर दिया और आत्मा अब तुम्हारे भीतर है, इसके विषय में हम यहेजकेल में देखेंगे।

अच्छा तो परमेश्वर का नियम है, फिर परमेश्वर का ज्ञान है, इससे भी बढ़कर बात है। पद 34। ''तब उन्हें फिर एक दुसरे से यह न कहना पड़ेगा कि यहोवा को जानो, क्योंकि, यहोवा की यह वाणी है कि छोटे से लेकर बड़े तक सब के सब मेरा ज्ञान रखेंगे, क्योंकि मैं उनका अधर्म क्षमा करूंगा, और उनका पाप फिर स्मरण न करूंगा।'' परमेश्वर का ज्ञान। यहां पर एक बात है : पुराने नियम में शिक्षक हुआ करते थे। यह शिक्षक मध्यस्थ होते थे। जैसे कि मूसा। नियम था व्यवस्था का शिक्षक, परमेश्वर के लोगों का शिक्षक। व्यवस्था विवरण 4,5,6 अध्याय 31। लेवी, याजक, भविष्यद्वक्ता यह वे लोग थे जो लोगों तक परमेश्वर का वचन पहुंचाते थे। तो पुराने नियम में यह था कि लोगों का परमेश्वर के साथ संबंध भूल–चूक करने वाले लोगों के द्वारा होता था। ऐसे शिक्षक जो परमेश्वर का वचन लोगों तक पहुंचाते थे। जो उनके लिए मध्यस्थी करते थे। परंतु इसका अर्थ यह था कि इसके कारण लोगों का परमेश्वर की उपस्थिति में जाना सीमित था।

मूसा की वाचा के संपूर्ण चित्र का स्मरण करें जब परमेश्वर अपने आप को पर्वत पर भस्म करने वाली आग के रुप में प्रगट करता है और लोगों से कहता है, ''दूर रहो! पर्वत के निकट किसी भी प्रकार से मत आओ अन्यथा तुम भस्म हो जाओगे।'' तब परमेश्वर के लोगों ने कहा, ''मूसा, हमारे लिए तो यही अच्छा है कि तू हमारी ओर से चला जा। हम यही बैठे रहेंगे।'' और उन्होंने यही किया। और मूसा चला गया। यह संपूर्ण पुराने नियम की बलीदान की पद्धती है। साल दर साल, बलिदान के दिन याजक परम

पवित्र की उपस्थिति में जाता था। बाकी सब लोग बाहर प्रतिक्षा में आश्चर्य करते हुए खड़े रहते थे। उसकी कमर में घंटिया बंधी होती थी, उससे यह पता चलता था कि वह अंदर अभी भी चल रहा है या नहीं। यदि उसे कुछ हो जाता है, और वह चल नहीं सकता तो कमर में एक रस्सी भी बंधी होती थी, जिसकी सहायता से उसे खिंचकर बाहर निकाला जाता था।

मनुष्य का परमेश्वर के साथ मिलना, परमेश्वर की उपस्थिती में उसे सीमित प्रवेश या और वह उसकी महिमा को दूर ही से केवल देख सकता था। मूसा ही केवल मिलाप के तंबू में जाता था, और बाकी सब लोग बाहर प्रतिक्षा करने थे। ओर जब वह तंबू से बाहर आता, जब उसकी परमेश्वर से मुलाकात होती और वह बाहर आता तब उसका चेहरा परमेश्वर की महिमा से चमक रहा होता था। यह कुछ दूरी पर रहकर, सीमित होता था। और मूसा, लेवी और भविष्यद्वक्ता और याजक सभी पापी पुरुष थे। उनके पास परमेश्वर का सीमित, दूर से प्राप्त दोष पूर्ण ज्ञान था। और नयी वाचा में यिर्मयाह कहता है, परमेश्वर कहता है सभी। केवल ज्ञानी, कोई एक या कुछ लोग नहीं। मेरे सब लोग मुझे जानेंगे। यह कैसे संभव है? नए नियम में एक निर्दोष व्यक्ति के द्वारा हमारा परमेश्वर से मेल हुआ है। यीशु केवल कोई एक साधारण शिक्षक नहीं है। वह परिपूर्ण शिक्षक है। यह वाचा का रखनेवाला है। वह परिपूर्ण भविष्यद्वक्ता है, परिपूर्ण याजक तथा राजा है।

वाचा का पालन करने की हमारी क्षमता के कारण हम परमेश्वर के साथ संबंध नहीं होते हैं। परंतु मसीह वाचा का पालन करने के लिए जो साध्य किया उसके कारण हम उससे संबंध होते हैं। और इसका अर्थ यह है कि अब हमे परमेश्वर की उपस्थिति में असीमित रहने का अवसर है। हम में से प्रत्येक व्यक्ति को। आज की स्थिति में कोई एक व्यक्ति परमेश्वर से मिलने के लिए तंबू में नहीं जाएगा। भाइयों और बहनों आप परमेश्वर से मसीह के द्वारा मिलते हैं। असीमित अवसर। इब्रानियों की पत्री का लेखक कहता है,? ''उसके सिंहासन के सामने पूरे हियाव के साथ जाओ।'' पापी मनुष्य परमेश्वर के सिंहासन के सामने पूरे हियाव के साथ जाए यह कैसे संभव है? केवल मसीह जो निर्दोष है उसके द्वारा वह निर्दोष मध्यस्थ है। और उसके द्वारा हमें परमेश्वर की महिमा का सीधे अनुभव प्राप्त हो सकता है।

पौलुस 2 कुरिंथ अध्याय 31 हमारे पास ऐसी आशा है और हम हियाव के साथ बोलते हैं। ''हम मूसा के समान नहीं है।'' पौलुस ने कहा, ''जिस ने अपने मुंह पर परदा डाला था, हम सब उघाड़े चेहरे से प्रभु की महिमा को देखते है।'' प्रत्येक स्त्री, पुरुष और बालक जो मसीह में विश्वास करता है, परमेश्वर के सामने वह धर्मी है। हियाव के साथ, बिना किसी रुकावट के, आप उसकी उपस्थिति में जा सकते हैं और आप उसकी महिमा को दिन प्रतिदिन देख सकते हैं। क्या आप जानते हैं कि आज हमें परमेश्वर की उपस्थिति में स्वयं जाने का जो लाभ प्राप्त है, उसके लिए परमेश्वर के लोग अनेक पीढ़ियों तक तरसते रहें? हमें प्रार्थना के पहनावे को भूलना नहीं चाहिए। उसकी महिमा को देखना, उसकी उपस्थिति

का अनुभव लेना यह लगातार होना चाहिए। कैसा महान यह अनुग्रह। अब ऐसा नहीं है कि इन अन्य सभी–वाचाओं में अनुग्रह नहीं था। कभी कभी हम सोचते हैं कि पुरानी वाचा, कोई अनुग्रह नहीं; नई वाचा, संपूर्ण अनुग्रह। नहीं! इन सभी वाचाओं में अनुग्रह था।

छुटकारा और दया, इसके विषय में हमने संपूर्ण वर्ष में देखा है, और वे ही इन वाचाओं की नेव में है। परंतु यहां तो अंतर है उसे देखें। पुरानी वाचा में लगातार बलीदान दिए जाते थे, जिसके आधार पर परमेश्वर पाप को अनदेखा करता था। साल दर साल बैल और बकरों का लहूं बलिदान के दिन वेदी पर छिड़का जाता था। और रोमियों 3:25 में कहा गया है कि, परमेश्वर ने पाप की अपनी सहनशीलता में आनाकानी की। परंतु साल दर साल बलिदान चढ़ाने पड़ते थे, ऐसा लगातार करना पड़ता था। क्यों? क्योंकि पाप अभी भी बना हुआ था। बैलों और बकरों का लोहू। परमेश्वर अपनी दया और अनुग्रह में पाप की आनाकानी करता रहा। परंतु नयी वाचा में एक ही परिपूर्ण बलिदान होगा जिसके द्वारा परमेश्वर हमारे पाप सर्वदा के लिए दूर करेगा। इसे लिख लिजिए, इब्रानियों, 10:11–18। आप कहते हैं, ''यिर्मयाह 31:33 और 34 में जिस बलिदान के विषय में कहा गया है वह परिपूर्ण बलिदान कहा है?''

आप इब्रानियों 10:11–185 को पढ़िए और आप देखेंगे कि इब्रानियों का लेखक यिर्मयाह 31 का संदर्भ दे रहा है। और उसके विषय में यह यह कहता है। इब्रानियों अध्याय 10 पद 11 में वह कहता है, '' और हर एक याजक तो खड़े होकर प्रति दिन सेवा करता है, और एक ही प्रकार के बलिदान को जो पापों को कभी भी दूर नहीं कर सकते, बार बार चढ़ाता है। पर यह व्यक्ति (यीशु मसीह) तो पापों के बदले एक ही बलिदान सर्वदा के लिए चढ़ाकर परमेश्वर के दहिने जा बैठा।'' एक ही बलिदान के द्वारा उसने उन सब पवित्र किए लोगों के लिए परिपूर्ण काम किया है। उसके बाद यह यिर्मयाह 31:33 और 34 का संदर्भ देता है। ''पवित्र आत्मा हमारे लिए गवाही देता है, क्योंकि यह कहने के बाद कि, मैं अपनी व्यवस्था उसके मन में समवाउंगा, और उसे उनके ह्रदय पर लिखूंगा'' ''फिर वह कहता है,'' मैं उनका अधर्म क्षमा करूंगा, और उनका पाप फिर स्मरण न करूंगा।'' जहां इन सबकी क्षमा है, वहां पाप के लिए बलिदान की आवश्यकता नहीं होगी।

जी हां, हमें अब कभी भी अपने पापों के लिए किसी भी प्रकार का बलिदान करने की आवश्यकता नहीं है। पापों के बदले में कुछ देने की आवश्यकता नहीं है। वह बलिदान पहले ही किया जा चुका है। वह बिलकुल परिपूर्ण बलिदान था। वह यीशु मसीह का बहाया गया लोहू था और उसके द्वारा हमारे पाप ढांपे गए हैं। उसके लोहू के द्वारा परमेश्वर हमारे सभी पाप भूल जाता है और क्षमा कर देता है। मैं उनके अपराध क्षमा करूंगा। यिर्मयाह 31 पद 34 में कहा गया है, वह हमारे सारे पाप क्षमा कर देता है, और परमेश्वर उन्हें भूल जाता है। मैं उनका फिर स्मरण न करूंगा। सोचिए कि आपका परमेश्वर आपके

किसी भी पाप को फिर स्मरण ना करने का निर्णय लेता है। नयी वाचा का अनुग्रह। हमें नयी वाचा प्राप्त होगी। हम एक नया समाज बनेंगे।

हमारे पास और अधिक समय नहीं है, परंतु आप अध्याय 31 के पद 31 की ओर जाएं, और आप देखेंगे कि परमेश्वर कह रहा है, ''मैं इस्राएल और यहूदा के घराने से नई वाचा बाधूंगा।'' और हम यिर्मयाह की पुस्तक में एक चित्र देखते हैं। हम यह चित्र अध्याय 3 के आरंभ में देखते हैं; और अध्याय 50 जो पुस्तक के अंत में है और यहां पुस्तक के बिलकुल मध्य में– हम इस्राएल का उत्तरी राज्य, और यहूदा का दक्षिणी राज्य देखते है। विभाजित राज्य। परमेश्वर अपने लोगों को फिर एक बार एकत्रित ले आता है। और केवल इस्राएल और यहूदा ही नहीं, परंतु यदि आप यिर्मयाह 4:2, यिर्मयाह 12:16 को देखें तो आप देखेंगे कि परमेश्वर ने अब्राहम को दिया हुआ अभिवचन पूरा हो रहा है जब परमेश्वर कहता है, ''मैं अपनी महिमा को देखने के लिए सब राष्ट्रो को एकत्रित करूंगा।''

एक नया समाज संस्कृति या एतिहासिक पार्श्व भूमी, भाषा, वांशिकता या सामाजिक या आर्थिक स्थिति के आधार पर नहीं परंतु इन सबको एक साथ एक बंधन में बांधने के द्वारा बनेगा। परमेश्वर के अनुग्रह में एकत्रित होगा। जो लोग परमेश्वर को जानते हैं और जिनके नए ह्रदय है। और नया समाज होने के नाते हम नयी नगरी की प्रतिक्षा करेंगे। आप जब इस अध्याय के अंत में जाते हैं और पद 38 और 39 को पढ़ते हैं। और इसे पढ़ने से पहले मेरे साथ इस चित्र की कुछ क्षण कल्पना करें। यहां परमेश्वर के लोग है। वह अभिवाचित देश में रह रहें हैं, और यहां वे उस समय से है, जब से परमेश्वर उन्हें मिस्र की गुलामी से छुड़ाकर लाया और यह देश वास करने के लिए दिया है।

और आप अब इन सभी वाचाओं की ओर ध्यान देंगे, तो देखेंगे कि प्रत्येक वाचा उस अभिवाचित प्रदेश से संबंधित है। परमेश्वर ने अपने लोगों को एक प्रदेश देने का अभिवचन दिया था। परमेश्वर उन्हें उस प्रदेश में ले आया। उस देश में जिसका अभिवचन उसने किया था। यह परमेश्वर की अपने लोगों के प्रति पूर्ण विश्वासयोग्यता का चित्र है। अब यह प्रदेश पूर्ण रुप से विनाश होने पर था। वह उस प्रदेश से बाहर निकाले जाने पर थे। वाचा के टूटने का यह अंतिम चित्र था। परमेश्वर के लोगों को उस प्रदेश से बाहर निकाला जा रहा था, जो उन्हें देने का अभिवचन उसने दिया था।

इसलिए परमेश्वर उन्हें कहता है, पद 38 ''देख यहोवा की यह वाणी है, ऐसे दिन आ रहें है जिनमें यह नगर हननेल के गुम्मट से लेकर कोने के फाटक तक यहोवा के लिए बनाया जाएगा। और मापने की रस्सी फिर आगे बढ़कर सीधी गारेब पहाड़ी तक, और वहां से घूमकर गोआ को पहुंचेगी।'' तो यहां एक करार है, उनके लिए, जो यिर्मयाह कह रहा है, यिर्मयाह के शब्दों के अनुसार ''यरूशलेम के पुर्नवास की प्रतिक्षा करो, परमेश्वर हमें फिर लौटाकर ले आएगा।'' फिर बाद में जब हम एज्रा और नेहमायाह की

पुस्तक का अध्ययन करेंगे तब हम इस बात को पूरा होते हुए देखेंगे। और हम नेहमायाह को ठीक उसी प्रकार शहर का पुर्ननिर्माण करते हुए देखेंगे जैसा कि यहां वर्णन है।
तो परमेश्वर कहता है, ''मैं तुम्हें फिर इस प्रदेश में ले आउंगा।'' वास्तव में अगले अध्याय में वह यिर्मयाह को बताता है कि वह उस प्रदेश में कुछ भूमि खरीदें जो शत्रु द्वारा कुछ ही समय ने नष्ट की जाने वाली थी। और यिर्मयाह कहता है, ''तेरे मन में क्या है?'' और परमेश्वर कहता है, ''यह वास्तविकता का चित्र है कि मैं अपने लोगों को फिर इस स्थान में वापिस ले आउंगा।'' तो यह सांत्वना थी। परंतु फिर आप जब पद 40 पर जाते हैं तो वहां लिखा है, ''और लोथों और राख की सब तराई और किद्रोन नाले तक जितने खेत है, घोड़ों के पूर्वी फाटक के कोने तक जितनी भूमी है, वह सब यहोवा के लिए पवित्र ठहरेगी।'' इसमें बहुत अधिक गहराई की बात है, और ऐसी और बातें हम यहेजकेल के अध्ययन में देखेंगे। परंतु इस अंतिम वाक्य की ओर ध्यान दें : ''सदा तक यह नगर फिर कभी न तो गिराया जाएगा और न ढाया जाएगा।'' यह शहर सर्वदा तक बना रहेगा।

और अचानक हमें यह समझ आता है कि इस नयी वाचा के केंद्र में केवल इस पृथ्वी के शहर का ही नहीं परंतु अनंतकालीन शहर का चित्र है। आप कहेंगे कि, ''नयी वाचा के साथ इसका संबंध किस प्रकार से है?'' मैं आपको स्मरण दिलाना चाहता हूं। प्रकाशित वाक्य 21:1–2 का चित्र जहां यूहन्ना कहता है, ''मैं ने नया स्वर्ग और नयी पृथ्वी देखी क्योंकि पहिला आकाश और पहिली पृथ्वी जाती रही थी, और समुद्र भी न रहा। फिर मैं ने पवित्र नगर नये यरुशलेम को स्वर्ग पर से परमेश्वर के पास से उतरते देखा, और वह उस दुल्हन के समान थी, जो अपने पति के लिए सिंगार किए हो। फिर मैं ने सिंहासन में से किसी को उंचे शब्द से यह कहते हुए सुना, कि देख परमेश्वर का डेरा मनुष्यों के बीच में है। वह उनके साथ डेरा करेगा, और वे उसके लोग होंगे, और परमेश्वर आप उन के साथ रहेगा और उनका परमेश्वर होगा।'' ठीक यही वाचा की भाषा को हम देखते हैं।

यहां और संपूर्ण पवित्र शास्त्र में, वह दिन आएगा, नई वाचा के विश्वास का समाज, जब हम परमेश्वर की उपस्थिति में लाए जाएंगे, नया यरूशलेम जहां परमेश्वर हमारे बीच वास करेगा इन वाक्यों को देखते है। बिलकुल अगला ही पद कहता है। ''और वह उनकी आंखो से सब आंसू पोंछ डालेगा, और इसके बाद मृत्यु न रहेगी।'' उनके लिए, यिर्मयाह के शब्दों के अनुसार, यरूशलेम के पुर्नवास की ओर देखना है। वह आने वाला है। हमारे लिए यीशु के कामों के अनुसार यरुशलेम नया शहर – नए स्थान की उत्कट प्रतिक्षा में रहना है जहां परमेश्वर के लोग होने के नाते हम सब परमेश्वर के साथ वास करेंगे।

मेरे साथ लूका अध्याय 22 को देखें, और यहीं पर हम आज का अध्ययन समाप्त करने वाले है। लूका अध्याय 22 पद 141 लूका 22:141 नयी यरूशलेम के पुर्ननिर्माण की उत्कंठा से प्रतिक्षा करना। पद 14।

अब यहां एक बात है : हम अभी जो भाग पढ़ने जा रहें है, इसकी भविष्यवाणी यिर्मयाह 600 से 700 वर्ष पहले ही कर चुका है। तो 600 से 700 वर्ष बाद यह हो रहा है, ''जब घड़ी पहुंची तो वह प्रेरितों के साथ भोजन करने बैठा'', और उसने उनसे कहा, ''मुझे बड़ी लालसा थी, कि दुःख भोगने से पहिले यह फसह तुम्हारे साथ खाउं, क्योंकि मैं तुमसे कहता हूं, कि जब तक वह परमेश्वर के राज्य में पूरा न हो तब तक मैं उसे कभी न खाऊंगा। तब उसने कटोरा लेकर धन्यवाद किया, और कहा, इस को लो और आपस में बांट लो, क्योंकि मैं तुमसे कहता हूं, कि जब तक परमेश्वर का राज्य न आए तब तक मैं दाख रस अब से कभी न पिऊंगा फिर उस ने रोटी ली, और धन्यवाद करके तोड़ी और उनको यह कहते हुए दी कि, ''यह मेरी देह है, जो तुम्हारे लिए दी जाती है : मेरे स्मरण के लिए यही किया करो।'' इसी रीति से उस ने बियारी के बाद कटोरा भी यह कहते हुए दिया कि, ''यह कटोरा मेरे उस लहू में जो तुम्हारे लिए बहाया जाता है...'' क्या?

''नई वाचा'' इसे रेखांकित करे, इस पर निशान लगाएं। ''यह कटोरा मेरे उस लहू में जो तुम्हारे लिए बहाया जाता है नई वाचा है।'' 600 या 700 वर्ष बाद जो यिर्मयाह के द्वारा परमेश्वर ने कहा था, 11 मैं तुम्हारे साथ नयी वाचा बांधूगा।'' हम यीशु के क्रूस पर चढ़ाए जाने की एक रात पहले की स्थिति में पहुंचते है, यहां वह अपने चेलों को एकत्रित करता है, वह नयी वाचा का उद्घाटन करता है। और वह कहता है अब मैं जल्द ही क्रूस पर चढ़ाया जाऊंगा जहां मेरा शरीर तुम्हारे लिए बलिदान किया जाएगा। तुम नई वाचा पाओगे जिसके द्वारा तुम्हारा ह्रदय पूर्णरूप से परिवर्तित होगा, भीतर से बाहर परिवर्तित होगा और तुम्हारे पाप पूर्ण रुप से हटाएं जाएंगे। और तुम्हारा संपर्क परमेश्वर के साथ बनेगा।